आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 20/03/2024; Accepted: 21/03/2024; Published: 24/03/2024

लेख

प्रतिशोध की प्यासी अंबा
(विनोद गायकवाड लिखित युगान्त के विशेष संदर्भ में)

- प्रो.प्रतिभा मुदलियार

प्रो.प्रतिभा मुदलियार, **प्रतिशोध की प्यासी अंबा**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 1/मार्च 2024,(83-87)

महाभारत के सभी स्त्री पात्र अपने चरित्र के अनुशीलन द्वारा समस्त विसंगतियों एवं विषमताओं के मध्य अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व का पुनर्मिलन करने की प्रेरणा देती है। महाभारत में अम्बा का जीवन नारीत्व का प्रतीक है। यह एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसको केवल भीष्म की मृत्यु का कारण समझा गया है। किंतु जब हम इस पात्र का सूक्ष्मता से अध्ययन करते हैं, तो इस नारी चरित्र के कुछ अनछुए पहलू सामने आने लगते हैं। चूँकि किसी चरित्र को न्याय देने की जब आवश्यकता महसूस होने लगती है तो साहित्य के अध्येता उसे अपनी रचनाओं से कुछ मिथक तोडते हैं। हिंदी साहित्य में मिथकीय काव्यों के माध्यम से साहित्यकारों ने यह काम बखुबी किया है। चित्रा चतुर्वेदी कार्तिका का अंबा पर आधारित एक उपन्यास है 'मैं अंबा नहीं भीष्मा' जिसमें अंबा की व्यथा कथा कही गयी है।

युगान्त पढ़ते समय या उसका अनुवाद करते समय मुझे अंबा यह पात्र अलग रूप से भा गया है। यदि हम अंबा को केन्द्र में रखकर युगान्त देखते हैं तो विनोद गायकवाड जी ने अंबा पर एक अध्याय रखा है और इस व्यक्तित्व के कुछ अहम पहलुओं को अत्यंत सरसता और रोचकता के साथ अपने उपन्यास में चित्रित किया है। चूँकि भीष्म के जीवन की इतिश्री करने में शकुनी प्रकारांतर से अंबा ही कारणीभूत होने के कारण अंबा महाभारत की महत्वपूर्ण महिलाओं में आ जाती है। क्यों कि उसके कारण पितामह भीष्म जैसा अधिनायक धराशायी हो जाता है । कभी कभी लगता है भीष्म जैसे महान पात्र के वध के लिए व्यास को अंबा/शिखंडी जैसे चरित्र का निर्माण क्यों करना पड़ा होगा। शायद किसी स्त्री या पुरुष में उतना अधिक तेज या ताकद नहीं रहा होगा इसलिए तृतीय लिगीं शिखंडी के पात्र की रचना करनी पड़ी होगी जिसकी आड में अर्जुन जैसा महापराक्रमी उनपर वार कर सके।

भीष्म के जीवन में भले ही अंबा का चरित्र कुछ समय के लिए आता है पर वह किसी की आँखों से ओझल नहीं हो सकता। भीष्म हो या पाठक उनके मन पर वह एक छाया की तरह मंडराता रहता है। कहीं कहीं सूचक रूप में लेखक अंबा या भीष्म का संदर्भ दे जाते हैं। अचानक उन्हें उसका स्मरण आ जाता है। अंबा अचानक धवल पर्वत कहती है और चौंकती है कि मैंन यह धवल पर्वत क्यों कहा... इस पर्वत का क्या संदर्भ होगा... या फिर अचानक भीष्म को अंबा का स्मरण हो जाता है।

युगान्त में गायकवाड जी ने अंबा के जीवन के लगभग प्रसंग हमारे सामने रखे हैं, वे इस प्रकार हैं,

- किशोरवयीन अल्हड रूप, अंबा, अंबिका, और अंम्बालिका का स्वयंवर, काशीनरेश द्वारा अपनी पुत्रियों का स्वयंवर, स्वयंवर में अपने प्राणप्रिय शाल्व के गले में वरमाला पहनाने की अंबा की अधीरता और अचानक भीष्म का स्वयंवर में प्रवेश, युद्ध और स्वयंवर में उसका भीष्म द्वारा किया जानेवाला अपहरण।
- हस्तिनापुर प्रवेश, सत्यवती से भेंट और शाल्व के प्रति अपने प्रेम का उद्घाटन।
- भीष्म का उसे मुक्त करना, अंबा शाल्व के पास जाना, शाल्व का उसको अस्वीकृत करना और उसके चरित्र को लांछित और अपमानित कर वापस भीष्म के पास जाने को कहना।
- अंबा का दुबारा भीष्म के पास आकर उनसे विवाह करने के लिए कहना और उनसे अस्वीकृत होने के बाद अतीशय दुख, क्रोध संताप के कारण भीष्म की मृत्यु का कारण में ही बनूँगी कहकर वहाँ से तैश, क्रोध, संताप, प्रतिशोध और अतीव दुख के साथ निकल जाना।
- अंबा की भटकन- वृटवृक्ष के सामने अपने पिता, अपने प्रेमी और भीष्म का धिक्कार,
- तपस्वियों से भेंट, होत्रवाहन से मुलाकात, परशुराम से अपनी कहानी कहना और परशुराम– भीष्म संवाद, परशुराम-भीष्म का युद्ध, परशुराम की पराजय।
- अंबा का घोर तपस्या में लीन होना और फिर शिव जी का वरदान लेकर अगले जन्म में शिखंडी बनकर भीष्म के वध का कारण बनना।

यह सारे प्रसंग है। किंतु गायकवाड जी ने इन प्रसंगों को काफी रोचक भी बनाया है। क्यों कि जब उपन्यास लिखा जाता है तब लेखक को कुछ स्वतंत्रता होती है।युगान्त में अंबा के चरित्र पर गायकवाड जी ने काफी अच्छा प्रकाश डालने का प्रयास किया है। अंबा का प्रारंभिक परिचय हमें एक सुंदर, सुशील, गंध प्यारी, चुलबुली, स्वच्छन्द युवति के रूप में होता हैं। जल विहार करनेवाली उन्मक्त युवति, केवडे के गंध से मुग्ध होनेवाली गंधप्यारी और फिर शौभपति शाल्व से अगाध प्रेम करनेवाली सपनों में खो जानेवाली प्रेमिका। भविष्य के सुंदर सपने सजानेवाली मुग्ध नारी। उसका यह प्रारंभिक सुंदर व्यक्तित्व हमें आकर्षित करता है। अपने पिता को अपने प्रेम की बात कहने का अंवा में साहस भी है। इस समय उसके जीवन का एक ही मकसद है.. शाल्व से विवाह करना। अपने प्रेमी को वरमाला पहनाकर अपने प्रिय पति के साथ जीवनयापन करना।

अपने पिता काशिनरेश द्वारा आयोजित स्वयंवर में अपने प्रेमी सौभपति शाल्व को ही वरमाला पहनाने को आतुर अंबा का जीवन, उसका सपना भीष्म के आने से अचानक तहस नहस हो जाता है। भीष्म स्वयंवर में बिन बुलाए आ जाते है और राक्षस विधि के अनुसार सबके साथ युद्ध कर और सबको पराजित कर वे तीनों बहनों का

हरण करते हैं। जिस शाल्व को भीष्म के सहायता की आवश्यकता थी उसी से वह युद्ध में हार जाता है। अंबा को पता ही नहीं चलता उसके साथ हो क्या रहा है। शाल्व जब भीष्म के सामन टिक नहीं सकता तो वह हताश हो जाती है। अम्बा की निराशा, हताशा में बदल जाती है, हताशा गुस्से में, गुस्सा तीव्र क्रोध में और फिर उसका तीव्र क्रोध, प्रतिशोध की प्यास में बदल जाता है।

दो शक्तिशाली व्यक्तियों के अहंकार में उसका जीवन ही तबाह हो जाता। उसका जीवन आमुलचूल हिल जाता है। पिता, प्रेमी और भीष्म से अस्वीकृत होते ही उसके जीवन का सारा खेल ही बदल जाता है और फिर शुरू होती है उसकी प्रतिशोध की यात्रा। इस बीच समाज की रूढ़िग्रस्त मानसिकता के कारण अम्बा के साथ ऐसी घटनाएँ घटती चली गयीं कि वह सदा के लिए पति तथा परिवार सुख से वंचित हो जाती है।

जब वह वन में चली जाती है तो वन में एख बहुत बडे बरगद वृक्ष के सामने खडी होकर अपने पिता, प्रेमी, भीष्म का धिक्कार कर देती है। यहाँ बरगद इसलिए है कि इसे अमर वृक्ष माना जाता है। वह जगह-जगह जाकर कहने लगती है, 'भीष्म ने मेरा जीवन बर्बाद कर दिया। क्या कोई योद्धा है, जो इसकी जान ले सकता है?' किंतु भीष्म के एक महान योद्धा होने के कारण कोई भी उनसे युद्ध नहीं करना चाहता था। वह परशुराम के पास जाती है। परशुराम चाहते हैं कि भीष्म अपनी प्रतिज्ञा तोड दें और अंबा के साथ विवाह कर लें। पर भीष्म ऐसा नहीं करते।

इस पूरे महाभारत में ऐसे बहुत से लोग मिलेंगे, जिन्होंने कोई प्रतिज्ञा की और वे किसी भी हालत में अपने वचन से पीछे नहीं हटना चाहते थे। उन दिनों सभ्यता का विकास हो रहा था। कोई लिखित संविधान, लिखित कानून नहीं था। ऐसी स्थिति में, किसी व्यक्ति का वचन सबसे महत्वपूर्ण चीज होती थी। जब कोई औपचारिक कानून नहीं होता, तो व्यक्ति का वचन ही कानून होता है। जब कोई वचन देता था, तो वह उसकी रक्षा के लिए किसी भी सीमा तक जा सकता था। वचन तोड़ने वाले व्यक्ति की कोई इज्जत नहीं होती थी और उसे किसी लायक नहीं समझा जाता था। इसलिए, भीष्म बोलते हैं कि, 'मेरे गुरु, अगर आप चाहें तो आपके लिए मैं अपना सिर काट सकता हूं, मगर अपना वचन नहीं तोड़ सकता।' परशुराम और भीष्म के बीच द्वंद युद्ध हुआ जो असाधारण था। परशुराम ने भीष्म को उन सब चीजों की शिक्षा दी थी, जो वह जानते थे। दोनों लगातार कई दिनों तक आपस में लड़ते रहे। ऋषि परशुराम बहुत क्रोधित हुए और वे भीष्म पर टूट पड़े। दोनों तुल्यबल थे। तेईस दिन तक भयंकर युद्ध हुआ। वे दोनों महान अस्त्र-शस्त्रों से युद्ध करने लगे। इस डर से कि अब पृथ्वी नष्ट हो जायेगी, नारदादि देवताओं ने हस्तक्षेप किया और युद्ध रोक दिया।

परशुराम ने अंबा से कहा कि अब मैं तुम्हें न्याय नहीं दे सकता लेकिन अपने गुरु और भगवान महादेव के पास जाओ। वे तुम्हें अवश्य ही सही मार्ग दिखायेंगे। इस अध्याय में दो बार युद्ध का वर्णन आया है। यह वर्णन अत्यंत जीवंत बन आया है। अस्त्रों शस्त्रों, वार प्रतिवारों का वर्णन अत्यंत सुंदर बन आया है।

अम्बा ने जंगल में घोर तपस्या शुरू कर दी। स्वयं गंगामाता ने उन्हें बहुत समझाया। लेकिन अंबा ने हार नहीं मानी.। अंततः शंकर प्रसन्न हुए लेकिन उन्होंने कहा कि इस जन्म में तुम उसे नहीं मार सकती। वे अगले जन्म में तुम्हारे कारण मरेंगे। अम्बा ने स्वयं अपनी चिता रचायी, उसमें कूदकर आत्मसमर्पण कर दिया। कितना बडा साहस खुद की चिता रचाना और स्वयं ही स्वाहा होना। इस समय अंबा का एक वाक्य है,

ठीक है इस जन्म से नही अगल जन्म से सही। स्त्री का प्रतिशोध यानी जन्म जन्म की यात्रा है। उससे उसकी मुक्ति नहीं, यह सारा संसार जानेगा।

अगले जन्म में उसने राजा द्रुपद के घर शिखंडी के रूप में जन्म लिया। महाभारत का भीषण युद्ध प्रारम्भ हो गया। 18 दिनों तक भयंकर युद्ध हुआ। भीष्म पितामह ने पांडव सेना का विनाश कर दिया। शिखंडी को देखते ही भीष्म ने अपने हथियार रख दिये और कहा कि मैं किसी स्त्री के विरुद्ध हथियार नहीं उठाता। उन्होंने हथियार डाल दिए। यह महाभारत की सबसे दर्दनाक मौत थी।

अम्बा ने वह इतिहास रच डाला जो वास्तव में मानवातीत था। भीष्म को पराजित करना असम्भव न था। इच्छामृत्यु का वरदान भी उन्हें प्राप्त था। यदि अम्बा अपना संकल्प पूरा करने के लिए शिखण्डी बनकर भीष्म पर प्रहार न करती तो अजेय भीष्म तो चिरंजीवी हो गये होते। तब तो महाभारत युद्ध अनन्तकाल तक चलता ही रहता। महाभारत में इतिहास बदल देने की अम्बा अथवा शिखण्डी की इस निर्णायक भूमिका को लेकर सोचा ही नहीं गया।

महाभारत की वह तेजस्विनी नारी है जो अपने प्रति अन्याय के प्रतिकार के लिए जी-जीकर मरती रही। इस सत्रह वर्षीय किशोरी ने किसी साधारण व्यक्ति को नहीं, युग के प्रचण्ड महारथी, अजेय योद्धा, श्रेष्ठ प्रशासक तथा राजधर्म के अद्वितीय प्रवाच,स्त्री का सम्मान तथा रक्षा करनेवाले धर्म प्रिय भीष्म को चुनौती दी थी। एक स्त्री जो अपमान और बदनामी सहन नहीं कर सकी, एक महान वीर की मृत्यु का कारण बन गई। जन्म-जन्मांतर की बदले की कहानी वहीं ख़त्म हो गई। उसकी पूरी जीवन यात्रा स्वतंत्रता की लड़ाई है। एक महिला के अपने पति को चुनने के अधिकार की लड़ाई है, और अन्याय के खिलाफ एक पुरे तंत्र के विरुद्ध एक संपूर्ण लड़ाई है। कई लोग उसकी लडाई को व्यक्तिगत प्रतिशोध समझ सकते हैं। पर ऐसा नहीं है। उसकी लडाई की इतनी सतही व्याख्या करना उसके लिए अनुचित है।

अम्बा महाभारत की कई महत्वपूर्ण महिलाओं में से एक थी और उसकी कहानी अद्भुत है। अंबा एक साहसी और स्वतंत्रता-प्रिय स्त्री थी जो अपने अधिकार के लिए संघर्ष करती रही। उसने प्रेम में रहते हुए भी अपने स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि अपने सम्मान और धर्म के लिए संघर्ष किया। उसका चरित्र आधुनिक समय की स्त्रियों को उत्साहित कर सकता है कि वे अपने मूल्यों और धरोहरों के लिए खड़ी हों और समाज में अपनी जगह बनाएं। इसलिए गायकवाड जी से उसे स्त्री विमर्श की आदि देवी कहते हैं।

अंबा ने अपने सम्मान के लिए संघर्ष किया और उसने तपस्या में रत होकर दिखाया कि स्त्री अपने उच्चतम आदर्शों को प्राप्त कर सकती है। उसने अपनी स्वतंत्रता की क़ीमत पर जोर दिया और उसने अपने जीवन

को स्वयं निर्मित करने के लिए साहस और धैर्य का परिचय किया। अंबा के माध्यम आत्म-समर्पण और स्वाधीनता की भावना को समझा जा सकता है। उसकी तपस्या और धार्मिक साधना से एक सशक्त और सकारात्मक स्त्री के दर्शन होते हैं। अपने लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, ऊँचाईयों तक पहुंचने के लिए कैसे साहस और समर्पण की आवश्यकता होती है यह भी अपने आप रेखांकित हो जाता है। यही अंबा है...इसलिए चंद्रकांत देवताले के शब्दों में,

एक औरत का धड़

भीड़ में भटक रहा है

उसके हाथ अपना चेहरा ढूँढ रहे हैं

उसके पाँव, जाने कबसे, सबसे

अपना पता पूछ रहे हैं।

****